योजना और बेकारी

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १७ | सम्पादक : मगनभाअी प्रभुदास देसाअी | अंक १२

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २३ मअी, १९५३

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

भूदान-आन्दोलनकी क्रांतिकारी शक्ति

मेरे सामने पाठक-मित्रोंके दो पत्र हैं, जिनमें श्री नारगोलकरके अिस कथनको चुनौती दी गअी है कि "अिस आन्दोलनकी सफलताका बहुत बड़ा आधार अुन कअी **बड़े** जमींदारोंके **हृदय-परिवर्तन** पर है, जिनसे अपनी मालिकीकी कुल जमीनका छठा भाग दानमें देनेकी आशा रखी जाती है।" ('हरिजन', ता० ४–४–'५३, पृष्ठ ३६, कालम १) मेरे खयालसे अिस कथनमें खास टीका हृदय-परिवर्तनकी आवश्यकताके खिलाफ थी, जिसकी सिद्धिके बारेमें कुछ शिक्षितोंके मनमें शंका है। अिसलिअे मैंने अुसी मुद्देके जवाबमें कहा कि यह शांतिपूर्ण और अहिंसक भूदान-आन्दोलनका दोष नहीं, बल्कि सार तत्त्व है। दोनों पत्रलेखक श्री नारगोलकरके कथनके दूसरे भागकी ओर अिशारा करके कहते हैं कि यह कहना गलत होगा कि भूदान-आन्दोलन बहुत हद तक **बड़े** जमींदारों पर निर्भर करता है। क्योंकि, जैसा कि अेक पत्रलेखक कहते हैं, "भूदान-आन्दोलनकी सच्ची सफलता असलमें पूरी तरह नहीं तो बहुत बड़ी हद तक सबसे पहले **छोटे** जमींदारों और **गरीब** जमीन-मालिकों पर निर्भर करती है। अभी तकका अनुभव यही बताता है।"

फिर हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि यह आन्दोलन किसी वर्गका संकुचित आन्दोलन नहीं है। अुसे हमें अपनी जमीनकी समस्या हल करने और अुसके जरिये देशकी गरीबी और बेकारीका सवाल निबटानेके लिअे सारे राष्ट्रका आन्दोलन बनाना है। अिस रूपमें वह अपनी सफलताके लिअे कुछ ज्यादा बड़े जमींदारों या समाजके समृद्ध लोगों द्वारा दयाकी वृत्तिसे दिये गये छोटे-छोटे दानों पर निर्भर नहीं करता। अगर ये लोग समयको पहचानकर काम न करें, तो भले हमारी सामाजिक तसवीर बेजमीन या गरीब लेकिन खेतों और कारखानोंमें खून-पसीना अेक करके काम करनेवाले आम लोगोंको तरफसे अिन वर्गोंको दी जानेवाली चुनौतीका रूप ग्रहण करे। अिसीमें भूदान-आन्दोलनकी क्रांतिकारी शक्ति निहित है।

दूसरे पत्रलेखक दाताओंके स्वभाव और अुनके हेतुओंका विश्लेषण करके लिखते हैं:

> "क्या आप मुझे अिस महान आन्दोलनके तात्त्विक अध्ययन और मेरे अपने जिले अलाहाबादमें किये गये थोड़े अमली कामके आधार पर बने हुअे मेरे विचारोंको यहां प्रकट करनेकी अिजाजत देंगे?
>
> मोटे तौर पर दाताओंको तीन श्रेणियोंमें बांटा जा सकता है:—
>
> (क) श्री विनोबाको दिया जानेवाला दान;
>
> (ख) श्री शंकरराव देव और श्री जयप्रकाशबाबू जैसे राजनीतिक नेताओं तथा कांग्रेसी मंत्रियोंको दिया जानेवाला दान; और
>
> (ग) सामान्य सर्वोदय-सेवकोंको दिया जानेवाला दान।
>
> मेरा नम्र मत यह है कि (क) श्रेणीमें वे दाता आते हैं, जो पवित्र और धार्मिक श्रद्धा और निष्ठासे महान आचार्यको दान देते हैं। (ख) श्रेणीमें वे दाता शामिल हैं, जो आज अुसी ढंगसे जमीनका दान देते हैं, जिस ढंगसे वे आजादीकी लड़ाअीके दिनोंमें नेताओंको बड़ी-बड़ी रकमें दानमें दिया करते थे। अुनमें से कुछ अैसे हैं जो आज सरकारी अधिकारियोंके डर या दबावसे दान देते हैं, लेकिन किसी दिन प्रत्यक्ष या परोक्ष रूपमें किसी-न-किसी तरहका बदला पानेकी अभिलाषा रखते हैं। शायद यही कारण है कि कभी-कभी वे अेक नेताको जमीन देनेसे अिनकार करते हैं और दूसरेको देते हैं। (ग) श्रेणी अुन व्यवहारकुशल लोगोंकी है, जो बहुत सोच-विचार और बुद्धिसे विश्वास हो जानेके बाद अपना धर्म समझकर अिस महान यज्ञमें हिस्सा देते हैं। दूसरी तरफ यह भी देखा गया है कि कांग्रेसी मंत्रियोंकी बात तो दूर, राजनैतिक नेताओंको भी अपनी यात्राओंमें बिलकुल जमीन नहीं मिली। अिसलिअे यह कहना कि सामान्य कार्यकर्ताको जमीन दानमें नहीं मिलती, अुसके साथ अन्याय करना है।"

यहां हम यह बात न भूलें कि किसी जन-आन्दोलनमें या अैसे आन्दोलनमें जिसे हम जन-आन्दोलन बनाना चाहते हैं, अुसके नेताओंसे ही स्पष्ट और तात्त्विक दृष्टिसे सच्चे ध्येय और अुद्देश्य रखनेकी आशा की जा सकती है। साधारण कार्यकर्ता और आम लोग अिन नेताओंसे अपील और दलीलकी सामान्य रूपरेखा ग्रहण करेंगे और अुसके अनुसार अिस आन्दोलनमें भाग लेंगे। जन-आन्दोलनको स्वरूप देनेवाली अैसी सामूहिक प्रक्रियामें लोगोंमें से अैसे आदमी, जिनका अुसमें कुछ स्वार्थ होता है या जिन्हें कुछ खोना पड़ता है, तत्काल महत्त्वपूर्ण दिखाअी देते हैं, क्योंकि अुनके हाथमें चालू परिस्थितिकी कुंजी होती है। लेकिन क्रांतिकारी परिस्थितिमें यही चीज सबसे ज्यादा धोखा देनेवाली होती है। अिसलिअे किसीको अिसकी बहुत ज्यादा परवाह नहीं करनी चाहिये, बल्कि श्रद्धा और विश्वासके साथ आगे बढ़ना चाहिये; क्योंकि अन्तमें जमीनका सवाल केवल जमीन-मालिकोंकी मरजी पर या दान पर नहीं निर्भर करता। मुख्य बात है जमीनको जोतकर फसल पैदा करनेकी। वही सच्ची सामाजिक जरूरत और अुद्देश्य है। जो अिसे पूरा करता है, अुसीका अन्तमें महत्त्व होता है। हो सकता है कि अैसा आदमी जमीनका कानूनी मालिक न हो। लेकिन हम चाहते हैं कि अिससे स्थितिमें कोअी फर्क नहीं पड़ना चाहिये। क्रांतिकारी परिस्थितिका अपना खुदका कानून होता है। वह अुस कानूनके पालनकी मांग करती है। वह क्या मांग करती है? वह कहती है कि जोतनेवालेके पास अपनी जमीन होनी चाहिये; और अगर वह किसीकी जमीन पर

www.vinoba.in

खेती करता है, तो कम-से-कम अुसे अपनी मेहनतके पूरे लाभसे छल-कपट द्वारा वंचित नहीं किया जाना चाहिये। अिसे शांति-पूर्ण और अहिंसक ढंगसे सिद्ध करनेके लिअे यह जरूरी है कि आजके जमींदार और जमीन-मालिक भी क्रांतिकारी परिस्थितिकी अिस मांग पर ध्यान दें और अुसमें भाग लेनेके अपने धर्मको समझें। क्योंकि यह आन्दोलन अैसा वर्ग-संघर्ष नहीं है, जिसकी कोअी साम्यवादी और समाजवादी कल्पना करता है या दुहाअी देता है। बल्कि वह सारे वर्गोंका अेक सर्वसामान्य आन्दोलन है, जो समाजमें अपनी-अपनी हैसियतके मुताबिक अपने पासकी सम्पत्ति, जमीन-जायदाद वगैराके ट्रस्टीके नाते काम करनेको बंधे हुअे हैं — यानी वे अुससे केवल अपना ही स्वार्थ न साधें, बल्कि सर्व-सामान्य सामाजिक हितके लिअे अुसका अच्छे-से-अच्छा अुपयोग करें। गांधीजीकी पद्धतिमें और समाजवादी या साम्यवादी पद्धतिमें यह बुनियादी भेद है। वर्ग-विग्रहके सिद्धान्तके रूपमें न तो भूदान-आन्दोलनकी कल्पना की गअी है, न अिस दृष्टिसे अुसे चलाया जा रहा है; वह ट्रस्टीशिपके सिद्धान्तके अधिक व्यापक और अधिक मूलभूत सत्य पर खड़ा है। वह जमीनके सवालको शांति-पूर्ण ढंगसे हल करना चाहता है, जिसके साथ जमीन-मालिक और बेजमीन दोनोंका अेकसा सम्बन्ध है और जो दोनोंको परिस्थितिके संपूर्ण ज्ञान और समझके साथ अपना-अपना पार्ट तुरन्त अदा करनेको कहता है।

७-५-'५३　　**मगनभाअी देसाअी**

(अंग्रेजीसे)

गयामें विनोबाजी

विनोबाजीके गयाके निवासमें जो अितिहास बननेवाला था, अुसकी पूर्व सूचना विनोबाजीने आते ही दी। "नानक पूरा पाअिया, पूरेके गुण गाअूं।" आज तक अपूर्ण संकल्पकी ही बात होती थी, लेकिन अब बिहारवासियोंने अेक संकल्प किया और विनोबाजीने अुसका गुणगान भी किया।

प्रार्थना-सभाके पहले युवकोंके प्रतिनिधि विनोबाजीसे मिलने आये। युवक सवाल पूछते गये, विनोबाजी जवाब देते गये। आखिरी सवाल था — "जब कि दुनियामें अेटम बम निर्माण हो रहा है, तब क्या भारतमें अच्छे-अच्छे अुपदेशोंसे ही काम चल जायेगा?"

"सिर्फ अुपदेशसे नहीं, परन्तु अच्छे कर्मसे काम चलेगा। आखिर अेटम बम तो अेक जड़-शक्ति है। वह सिर्फ भय पैदा कर सकता है, विचार नहीं बदल सकता। विचारमें जो ताकत है, वह अेटम बममें नहीं है।"

यह तो प्रस्तावना थी। अिसी विषयको लेकर गांधी-मण्डपमें शामकी प्रार्थना-सभामें विनोबाजीने जो भाषण दिया, वह जड़को चेतनमें बदल देनेवाला था। विचार-शासनकी महिमा बताते हुअे विनोबाजीने कहा:

"दुनियामें जो शस्त्रास्त्र निर्माण होते हैं, वे खुद अुठकर कुछ भी काम नहीं कर सकते। अुनको बनानेवालोंने भी विचारका ही आश्रय लिया है। अुनकी कल्पना करनेवालोंने भी अेक विचार मनमें रखा है। और अुनका अुपयोग करनेवाला भी अेक विचारवान मनुष्य होता है, जिसका अुद्देश्य विचार-प्रचार ही होता है। अिस तरह अुसके आदि, अन्त और मध्य, तीनोंमें विचार ही विचार दीख पड़ता है। विचारका बाह्य रूप अेटम बम भी हो सकता है और दानपत्र भी हो सकता है। अेटम बम सिर्फ अेक मसाला नहीं है और दानपत्र सिर्फ अेक कागज नहीं है। दोनोंके पीछे विचारकी अेक प्रेरणा है। अेक सद्विचार होता है, जो शाश्वत होता है और अेक असद्विचार होता है जो अशाश्वत होता है। लेकिन सद्-असद्का निर्णय मनुष्य हमेशा ठीक तरहसे नहीं कर पाते हैं, अिसलिअे वे असद्विचार ग्रहण कर लेते हैं। जहां मनुष्यने विचार ग्रहण किया, वहां अुसके पीछे वह नाना कर्म, योजना, कल्पना, मंत्र, तंत्र सारा खड़ा करता है। लेकिन जब अुसे पता चलता है कि यह विचार गलत था, तो अेक क्षणमें वह सारी योजना, कल्पना, तंत्र खतम हो जाता है। मानव गलत रास्ते पर जा सकते हैं, परन्तु हम अुसे प्रयोग कहते हैं। जैसे ज्ञान-विज्ञानके प्रयोग चलते हैं, वैसे ही समाजशास्त्रके भी प्रयोग चलते हैं। अनादिकालसे यह चलता आ रहा है कि मानव अेक विचारके आधार पर सारी रचना निर्माण करता था, पर जहां वह विचार असद्विचार साबित हुआ वहां नया विचार आता है। अध्यात्मशास्त्र, समाजशास्त्र और राज्यशास्त्र आदि जीवनके सब अंग-अुपांगोंमें यह चलता आ रहा है। पुराने असद्विचार नष्ट हो जाते हैं और नये-नये अुससे परिशुद्ध विचार आते रहते हैं। लेकिन राज चलता है विचारका ही। भगवानने गीतामें अेक पेड़का सबक बताया है, जिसकी जड़ अूपर है और शाखायें नीचे हैं, जो टिकता भी है और नहीं भी टिकता। यह मनुष्य कृतिका रूपक है। मनुष्यकी जड़ अुसका दिमाग है और हस्तपादादि अुसकी शाखायें हैं, जिनसे वह कर्म करता है। पुराना विचार नष्ट होता है और नया आता है, अिसलिअे वह वृक्ष टिकता नहीं है। परन्तु सत्ता चलती है विचारकी ही, अिसलिअे वह टिकता है। विचारके पोषणके लिअे मनुष्य जो सारा तंत्र खड़ा करता है, अुसीको सभ्यता कहते हैं।

"फलाने विचारका शासन स्थिर नहीं है, पर विचार-शासन स्थिर है। नित्य निरंतर विचारके जो झगड़े चलते हैं, अुन्हें समाजशास्त्रमें संघर्ष कहते हैं और अध्यात्मशास्त्रमें विचार-मंथन या विचार-शोधन कहते हैं। नाम कुछ भी दीजिये, लेकिन अुसका मूल स्वरूप विचारमें ही होता है। अिसलिअे जो सोचनेवाले हैं, जिन्होंने दुनियाकी असलियतको पहचान लिया है, वे विचारको कभी भी अपने हाथोंसे जाने नहीं देते और नित्य निरंतर विचारका प्रचार करते रहते हैं। वे जानते हैं कि दुनिया अेक बार समझ जाय, तो सारा समाजका ढांचा अुसी क्षण बदल जाता है। विचार समझमें आ जाय, तो जिन हाथोंने अेटम बमका निर्माण किया, वे ही हाथ अुसे नष्ट भी कर देंगे। जिन हाथोंने यह सारा मायाका संसार निर्माण किया, वे ही हाथ अुसका संहार भी कर देंगे। अिसलिअे जो लोग विचारमें श्रद्धा रखते हैं, वे जानते हैं कि यह सारा मृगजल है। जो देश अेटम बम जैसे शस्त्र निर्माण करते हैं, अुनसे हम कह सकते हैं कि आपके पास तो अिने-गिने शस्त्र हैं। पर हमारे पास अनंत शस्त्र हैं। जहां विचाररूपी सूर्यनारायण अपने अनन्त पहलुओंमें प्रगट होता है, वहां अन्धकार टिक नहीं सकता। अिसलिअे कार्यकर्ताओंसे मेरी प्रार्थना है कि विचारमें आपकी श्रद्धा कभी ढीली नहीं होनी चाहिये और विचार-प्रचारमें नित्य अुत्साह मालूम होना चाहिये। सद्विचार किसी अेक मनुष्यके मनमें किसी अेकांत गुफामें भी क्यों न पैदा हो, वह सारी दुनियामें फैलनेके लिअे निकलता है। अुसे कोअी रोक नहीं सकता। विचार-प्रचारका रेडियोसे भी शक्तिशाली साधन है आसमान। प्रकाश-किरणोंके समान विचार भी आसमानके जरिये फैलता है और जैसे दूरकी तारकाओंकी किरणोंको यहां तक पहुंचनेमें बरसों लग जाते हैं, वैसे ही विचारके पहुंचनेमें भी समय लग सकता है। अिसलिअे मेरी विचार पर जितनी श्रद्धा है, अुतनी दूसरी किसी चीज पर नहीं है। अिसलिअे मैं निरंतर सद्विचारका ही प्रचार करता जा रहा हूं।"

www.vinoba.in

सद्‌विचारकी शाश्वत बुनियाद पर मानव-जीवनमें सर्वांगीण क्रांति करना हमारा लक्ष्य है। लेकिन जिस मानवके जरिये अिस लक्ष्य तक पहुंचना है, वह अपनेको अिस कामके लिअे असमर्थ पाता है। जैसे कि जिलेकी कार्यकर्ताओंकी सभामें जिला भूदान-समितिके सभापति श्री गौरीबाबूने कहा, "हम अितना महान काम करनेमें अपनेको नालायक समझते हैं।"

विनोबाजीने जवाब दिया, "हम सब नालायकोंकी ही जमात हैं। मैं खुद अिस कामके लिअे अपनेको असमर्थ पाता हूं, क्योंकि मुझमें शक्तिका अभाव है। मेरी स्वाभाविक वृत्ति अेकान्त ध्यान-चिन्तनकी ओर है। लेकिन अीश्वर नालायकोंसे ही बड़ा काम लेना चाहता है।"

साहित्यिकोंने जब विनोबाजीको अपनी आर्थिक कठिनाअियां सुनाअीं, तब विनोबाजीने कहा:

"साहित्यिक जरा विचित्र स्वभाववाले होते हैं। अुनमें कुछ तो वाल्मीकि और तुलसीकी कोटिके विरक्त पुरुष होते हैं। अुनका साहित्य अपने आप फैलता है। मैं मानता हूं कि कलाकारको या तो किसान बनना चाहिये या अैसे छोटे-छोटे अुद्योग करना चाहिये, जिनसे अुसे कुछ आमदनी हो जाय, लेकिन जिनमें अुसके दिमागको ज्यादा तकलीफ न हो। कबीर अगर बुनकर न होता, तो कबीर न बनता। जो कवि जनताके अुद्योग करते थे, जो जनताके हृदयके साथ अेकरूप हो गये थे, अुनके साहित्यका प्रचार बिना प्रिंटिंग प्रेसके हुआ है। कवि जितने सृष्टिके साथ अेकरूप होंगे, अुतना ही काव्य बढ़ेगा। लेकिन जो अिस श्रेणीके कलाकार नहीं हैं, अुन्हें कुछ आश्रय मिलना चाहिये। पर वह सरकारकी तरफसे नहीं मिल सकता। अुसके लिअे सम्पत्तिदान-यज्ञकी प्रवृत्ति चलनी चाहिये। सम्पत्तिदानके जरिये जनता खुद होकर अैसे कलाकारोंके कुटुम्बोंका पोषण कर सकती है, जिसमें दान लेनेवाले और देनेवाले दोनोंकी चित्तशुद्धि हो सकती है।"

त णोंने विनोबाजीसे साम्यवाद, पूंजीवाद आदिके बारेमें सवाल पूछे, जैसा कि वे हमेशा करते हैं। भारतीय साम्यवादियोंके बारेमें अुन्होंने कहा, "साम्यवादी आर्यसमाजियोंके समान अेक किताबको प्रमाण मानते हैं और परिस्थिति और अकल दोनोंको छोड़ते हैं। मार्क्स अगर अिस जमानेमें रहता तो वह अपने विचारोंमें परिवर्तन करता, क्योंकि वह मार्क्स था, मार्क्सवादी नहीं था। भारतीय साम्यवादी भारतके दस हजार सालके विचारप्रवाहसे अपरिचित रहते हैं, अिसलिअे वे भारतको नहीं पहचान सकते।"

पूंजीवाद संघर्षके बिना केवल प्रेमसे कैसे खतम हो सकता है, अिस सवालका जवाब देते हुअे विनोबाजीने कहा कि "पूंजीवादका अन्त न संघर्षसे होता है, न प्रेमसे। अुसका अन्त तो विचारसे होता है। संघर्षसे क्षय होता है और प्रेमसे वृद्धि होती है। लेकिन दोनोंसे भी क्रांति नहीं हो सकती। समाजमें क्रांति करनेवाली अेक ही चीज है — विचार।"

५–५–'५३ नि० दे०

अुरुळीकांचन

निसर्गोपचार आश्रमकी ओरसे

अिस छोटीसी पुस्तिकामें गांधीजी द्वारा स्थापित निसर्गोपचार आश्रम, अुरुळीकांचनका हेतु, कार्यपद्धति, आहारशास्त्रका विवेचन और सीधे-सादे व सस्ते कुदरती अुपचारोंका वर्णन संक्षेपमें दिया गया है।

कीमत ०–१२–० डाकखर्च ०–५–०

प्राप्तिस्थान :— **नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद – ९**

अ० भा० खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड

मार्च १९५३ के अंतिम सप्ताहमें अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग बोर्डकी दूसरी बैठक नअी दिल्लीमें हुअी। अुसमें १९५३-'५४ के लिअे खादी-काम और दूसरे ग्रामोद्योगोंके विकासके लिअे बनाया गया बजट स्वीकार किया गया। खादी-कामके लिअे रु० १,०८,१२,६०० का खर्च और दूसरे ग्रामोद्योगोंसे सम्बन्धित कामके लिअे रु० ८६,२०,२५० का खर्च मंजूर किया गया। बोर्डने अपने बजटमें कर्ज और पेशगीके रूपमें खादी-कामके लिअे रु० १,७५,००,००० की और अन्य ग्रामोद्योगोंके लिअे रु० २५,००,००० की व्यवस्था की। दोनों विभागोंके कामका ब्यौरेवार कार्यक्रम भी मंजूर किया गया।

चालू सालमें विकासके लिअे नीचेके ग्रामोद्योग चुने गये:

१. तेल-घानीका अुद्योग
२. चावलोंकी हाथ-कुटाअी
३. नीमके तेलसे साबुन बनाना
४. हाथ-कागज
५. मधुमक्खी-पालन
६. ताड़गुड़
७. गुड़ और खांडसारी
८. चमड़ा
९. झोंपड़ियोंमें तैयार की जानेवाली दियासलाअी
१०. विविध अुद्योग

बोर्डने अिस बातका पता लगानेके लिअे विभिन्न राज्योंकी सरकारोंसे सम्पर्क कायम किया है कि देशके अलग-अलग भागोंमें अुसकी प्रवृत्तियां कैसे चलाअी जा सकती हैं और अुन्हें सरकारी विभागों द्वारा या गैरसरकारी संस्थाओं द्वारा चलाअी जानेवाली अिसी प्रकारकी प्रवृत्तियोंके साथ आज कैसे जोड़ा जा सकता है।

ग्रामोद्योगोंके सम्बन्धमें विशेष शोध करनेवाली अनुसंधान-शाला खोलनेके प्रश्न पर चर्चा की गअी। आशा की जाती है कि अगले तीन माहमें अिसके सम्बन्धमें अेक योजना तैयार हो जायगी।

अ० भा० हाथ-करघा बोर्ड और अ० भा० दस्तकारी बोर्डसे सम्बन्ध कायम करनेकी व्यवस्था की गअी।

बोर्डके सदस्योंकी प्रधानमंत्री और अुनके कुछ साथियोंके साथ अिस विषय पर चर्चा हुअी कि भारतकी राष्ट्रीय अर्थ-रचनामें खादीका क्या स्थान है और अगले पांच वर्षोंमें योजनाबद्ध विकासके लिअे हमारे देशमें कितनी गुंजाअिश है। अिस सम्बन्धमें ब्यौरेवार प्रस्ताव केन्द्रीय सरकारकी तरफ भेजे जा रहे हैं।

प्राणलाल अेस० कापड़िया
मंत्री,
(अंग्रेजीसे) अ० भा० खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड

गांधी-चित्रावली

लेखक — जीतमल लूणिया, हिंदी साहित्य मंदिर, अजमेर; पृष्ठ – १४४; चित्र लगभग १००; कीमत १–०–०।

राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रप्रसाद पुस्तककी भूमिकामें लिखते हैं:

"अिस पुस्तकमें श्री जीतमल लूणियाने महात्मा गांधीजीका संक्षिप्त जीवन-चरित्र लगभग १०० चित्रोंके साथ प्रकाशित किया है। अिसके अलावा अिसमें पू० बापूके ११ व्रत, रचनात्मक कार्यक्रम, अुनके जीवनसे क्या क्या सीखें, दिव्य वाणी आदि अनेक सामग्री देनेसे पुस्तककी अुपयोगिता बहुत बढ़ गअी है। अिस पुस्तककी कीमत भी बहुत कम रखी गअी है। अुनका विचार है कि अिस पुस्तकका खूब प्रचार हो। यह प्रयत्न सराहनीय है। मैं अिसके लिअे श्री लूणियाजीको बधाअी देता हूं।"

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

२३ मअी १९५३

योजना और बेकारी

धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूपसे बेकारी हमारे देशमें फैल रही है; और आश्चर्यकी बात तो यह है कि आज करोड़ों रुपयेके खर्चवाली पंचवर्षीय योजना पर अमल शुरू हो जानेके बावजूद यह स्थिति है। अितिहासके आधार पर कहा जाय तो बेकारी हमारे देशमें कोअी नअी चीज नहीं है। सच तो यह है कि अगर हम भारतमें १८ वीं सदीसे आगेका ब्रिटिश शासनका अितिहास देखें, तो हमें पता चलेगा कि बेकारी विदेशी हुकूमतकी नींव रही है और देशकी सामाजिक-आर्थिक रचनामें अुसने ताने-बानेका काम किया है। अुस व्यवस्थामें जो लोग सम्पन्न या धनी बने, अुन सबकी — और अुनमें विदेशी शासक भी शामिल हैं — मुख्य नीति यह रही कि लोगोंकी बेकारीका ज्यादासे ज्यादा फायदा अुठाया जाय। अुस व्यवस्थाको लगभग दैवी सत्य मान लिया गया, जिसका मनुष्यके कार्योंके साथ कोअी सम्बन्ध नहीं। यह स्थिति आज तक बनी रही। स्वराज्यके आगमनने अिस स्थितिको पहले-पहल चुनौती दी। अिस नये स्वराज्यमें आज मध्यम वर्गके लोगोंका प्रभुत्व है। वे हमारे शिक्षित वर्ग हैं। वे बोल सकते हैं और अपने पर किसी तरहका प्रहार या अन्याय होने पर शोर-गुल मचा सकते हैं। आज जो हमें चारों तरफ बेकारीका होहल्ला सुनाअी देता है, अुसका सबब यह है कि अिन वर्गोंको सरकारमें, व्यापार-अुद्योगमें या विभिन्न पेशोंमें काफी नौकरियां नहीं मिल रही हैं। और सरकारका ध्यान अिस परिस्थितिकी ओर गये बिना रह ही नहीं सकता। लेकिन यहां मैं जिस सचाअीकी तरफ ध्यान खींचना चाहता हूं, वह तो यह है कि बेकारी हमारा पुराना रोग है; हम आज अुसकी शिकायत अिसलिअे करते हैं कि मध्यम-वर्गके लोग अुसके शिकार हो रहे हैं। यह कोअी आम लोगों द्वारा या अुनकी तरफसे अुठाअी गअी पुकार नहीं है, जो कि पिछली कुछ सदियोंमें हमेशा बेकारी और अर्ध-बेकारीके बोझ तले दबे रहे हैं। स्वराज्य सरकारके हल करनेकी अिस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समस्याके बारेमें अपनी आत्म-सन्तोषकी वृत्तिमें लाभदायक सुधार करनेकी खातिर भी हम अिस चीजको याद करें तो अच्छा ही है।

यहां यह भी ध्यानमें रखना चाहिये कि शिक्षित मध्यमवर्गकी नौकरियोंकी मांग अजीब ढंगकी है। वे 'बाबूगिरी' की नौकरी चाहते हैं। अुनकी बेकारी शिक्षितोंकी बेकारी कही जाती है। अुन्हें अेक खास तरीकेसे विशेष ढंगका काम करना सिखाया गया है। यह हमारे मध्यम वर्गोंको दी जानेवाली अंग्रेजी शिक्षाकी अनोखी पद्धतिकी देन है। आम लोगोंका अुसमें कोअी हिस्सा नहीं रहा है। वे अितने सादे और भोलेभाले हैं कि मेहनत करके अीमानदारीकी रोटी कमा सकते हैं। मध्यमवर्गके लोग अैसे नहीं हैं; अुन्हें क्लार्ककी और दूसरी नौकरियां चाहियें। यह अंग्रेजी शिक्षाका सबसे बुरा परिणाम है, जो आज हमसे अपना कर वसूल कर रहा है। यह हमारे हालके अितिहासका दूसरा पहलू है, जिस पर हमें आज ध्यान देना चाहिये।

लेकिन आजका मुख्य प्रश्न यह है कि योजना-मंत्रालय द्वारा खोले हुअे कामों पर करोड़ों रुपये खर्च किये जाने पर भी दिनोंदिन बढ़नेवाली बेकारी हमारे देशमें क्यों है। हमारे अर्थ-मंत्रीने भी कुछ दिन पहले यह बात मान ली थी कि देशमें बेकारी बढ़ रही है, पर अुन्होंने अिसके कारणों पर कोअी प्रकाश नहीं डाला। बेशक आज हमारे देशकी आर्थिक योजना बनानेकी हमारी दृष्टिमें कोअी भारी दोष है। हमारे प्रधानमंत्रीने अपने हालके महाराष्ट्रके दौरेमें दिये गये अेक भाषणमें देशमें बढ़ रही बेकारीका जिक्र करते हुअे कहा था कि आज हमारी मुख्य समस्या पैसेका अभाव है। अुन्होंने कहा कि काफी पैसा न होनेके कारण सरकार बेकारी दूर करनेवाली बड़ी-बड़ी योजनायें हाथमें नहीं ले सकी। लेकिन क्या यह विश्लेषण सही है? आज अपने हाथका जो पैसा हम खर्च कर रहे हैं, अुसका क्या परिणाम आता है? क्या बेकारी रुपये-पैसेसे ही दूर की जा सकती है? रुपया-पैसा तो ज्यादासे ज्यादा अुस श्रमका सहायक हो सकता है, जिसे संगठित करके ज्यादा सम्पत्ति पैदा करनेमें लगाया जाना चाहिये। क्या योजना-कमीशनका तरीका यह काम सही ढंगसे करता है? हमारे पास जितने चाहिये अुतने ही बेकार मजदूर नहीं हैं, बल्कि अुससे बहुत ज्यादा हैं। यद्यपि हम अितने गरीब हैं कि पैसा बचा नहीं सकते, लेकिन राष्ट्रीय खजानेसे मिलनेवाला जरूरी पैसा तो हमारे पास है ही। पंचवर्षीय योजनाके लिअे जो करोड़ों रुपये बजटमें रखे गये हैं, अुनका काफी बड़ा हिस्सा कर्ज और करोंके राष्ट्रीय साधनोंसे मिलता है। हमारी योजना-नीतिका सबसे दुःखदायी पहलू तो यह है कि वह पूंजीके आधार पर खड़ी है, श्रम या सीधे बेकारी मिटानेके कार्यक्रमकी बुनियाद पर नहीं। दरअसल पूंजी गौण चीज है, जिसने मौजूदा विश्वव्यापी पूंजीवादी अर्थरचनामें अनावश्यक महत्त्व प्राप्त कर लिया है। पूंजी बेकारीको नहीं मिटा सकती। वह केवल अपनेको ही खिला-पिलाकर ज्यादा मोटी बनाकर अैसी व्यवस्थाको जन्म देती है, जो बुनियादी तौर पर पूंजीवादी और किसी वर्ग या राज्यमें केन्द्रित व्यवस्थाके सिवा और कुछ हो ही नहीं सकती। अपने सफल संचालनके लिअे अुसे युद्ध और शस्त्रास्त्रोंकी जरूरत होगी। लेकिन यह सब दूसरी कहानी है। अिस चीजके आर्थिक पहलू तक ही अपनेको सीमित रखते हुअे मुझे लगता है कि 'अिकॉनामिक वीकली' की नीचेकी टीका, जो ४ अप्रैल, १९५३ के 'हरिजन' में अुद्धृत की जा चुकी है, यहां देना अुपयुक्त होगा:

> "....जिस देशकी जनसंख्या कम है, लेकिन जो भौतिक साधन-सम्पत्तिमें समृद्ध है, अुसे श्रमके खर्चमें किफायत करनी चाहिये; परन्तु जहां जनसंख्या ज्यादा है और गरीबी है, अुसे पूंजीमें किफायत करनी चाहिये और श्रमका अुपयोग खुले हाथों करना चाहिये। अिसलिअे (पंचवर्षीय) योजनाको भले हम अेक दिलचस्प कसरत मानें या अूपरी तड़क-भड़कसे युक्त खिलौना कह लें, लेकिन यह स्पष्ट समझ लेना चाहिये कि अुससे हमारा कोअी सवाल हल नहीं होगा। समस्याका हल गांधीवादी अर्थनीतिके अनुसरणसे, यानी गृह-अुद्योगोंके जरिये ही होगा। गृह-अुद्योगोंकी अर्थ-व्यवस्था समझनेमें कठिन जरूर है। गृह-अुद्योगोंके मालको बहुत खर्चीला माना जाता है, और अैसा खयाल किया जाता है कि मिलोंके मालसे टक्कर लेनेके लिअे अुसे विशेष संरक्षण देनेकी जरूरत होती है। लेकिन अगर अेक बार यह बात समझ ली जाय कि गृह-अुद्योगोंका माल आखिर किसानकी फुरसतके समयका अुत्पादन है, जिसमें कि वह अन्यथा कुछ कमाये बिना बैठा ही रहता है, तो अुनका महत्त्व ध्यानमें आ जाता है। स्वाभाविक है कि किसानको यह योजना बहुत आकर्षक नहीं मालूम होगी, क्योंकि अुसे केवल चार माह काम और बाकी आठ माह छुट्टी मनानेकी आदत पड़ गअी है। अुसकी दृष्टि बदलनेके लिअे काफी दृढ़तापूर्वक और लगातार प्रचार

www.vinoba.in

करनेकी आवश्यकता होगी। तभी परिस्थितिमें कोअी फर्क पड़ेगा।"

संक्षेपमें हमारी राष्ट्रीय योजनाका यह सिद्धान्त होना चाहिये। क्या सरकार अिसे अपनाकर अुस पर अमल करेगी?

४–५–'५३ मगनभाअी देसाअी

(अंग्रेजीसे)

अैसी मुसीबत जिससे बच सकते हैं

अेक सज्जनने अपनी कष्ट-कहानीसे भरा हुआ अेक लम्बा पत्र भेजा है, जिसमें वे लिखते हैं:—

"मैं (६७ बरसकी अुम्रका) अेक स्कूल-मास्टर हूं और मेरी सारी जिन्दगी (४६ साल) अिसी काममें बीती है। मैंने बंगालके अेक अैसे गरीब किन्तु बहुत सम्मानित कायस्थ-परिवारमें जन्म लिया, जो किसी समय अच्छा संपन्न था, लेकिन बादमें अुसे गरीबीने ग्रस लिया। परमात्माकी कृपासे मुझे ७ लड़कियों और २ लड़कोंके पिता होनेका सौभाग्य प्राप्त है। अिनमें से सबसे बड़ा लड़का २० बरसका होकर गत अक्तूबरमें चल बसा, और रोने-पीटनेके लिअे हमें असहाय और दुःखी छोड़ गया। वह अेक होनहार युवक था, और अपनी जिन्दगीमें केवल अेक अुसीसे मुझे कुछ आशा थी। जो ७ लड़कियां हैं, अुनमें से ५ का तो ब्याह हो चुका है, पर छठी और सातवीं (जिनकी अुम्र १८ और १६ सालकी है) अभी भी ब्याहनेको हैं। मेरा छोटा लड़का ११ बरसका नाबालिग है। ६०) रुपये मेरी तनख्वाह है, जिसमें गुजर ही बहुत मुश्किलसे होता है। बची हुअी रकमके नाम मेरे पल्ले अेक पैसा भी नहीं। बल्कि कर्जदार होनेके कारण अकिंचनसे भी बदतर मेरी हालत है। छठी लड़कीके लिअे लड़का तो तय कर लिया है। लेकिन ब्याहका खर्च ९०० रुपयेसे कम न होगा, जिसमें ३०० रुपये तो जेवर और दान-दहेजमें ही चले जायंगे। कनाडाकी 'सनलाअिफ अिश्योरंस' कम्पनीमें मेरा २००० रु० का आजीवन-बीमा है। १९१४ में मैंने बीमा कराया था। अिस कम्पनीने मुझे ४०० रुपयेका कर्ज देना मंजूर कर लिया है। लेकिन यह तो जरूरी रकमसे सिर्फ आधी ही है; बाकी आधीके लिअे मेरे पास कोअी अुपाय नहीं है। मैं बहुत ही असहाय स्थितिमें हूं। क्या आप यह आधी रकम देकर लड़कीके अिस गरीब पिताकी मदद नहीं कर सकते?"

अिस तरहके जो बहुतसे पत्र मेरे पास आते रहते हैं अुनमें से यह अेक है। अैसे पत्र ज्यादातर हिन्दीमें लिखे होते हैं। लेकिन अंग्रेजी शिक्षासे लड़कियोंके मां-बापोंकी हालत सुधर जाती हो सो बात भी नहीं है। बल्कि कअी मामलोंमें तो अिस दृष्टिसे अुनकी हालत और भी बदतर हो गअी है कि अंग्रेजी पढ़ी-लिखी लड़कीके लिअे जैसा वर चाहिये, अुसका बाजार-भाव भी अुतना ही बढ़ा-चढ़ा होता है।

अिस बंगाली पिताके जैसे मामलोंमें तो आवश्यक रकमकी कर्ज या किसी दूसरे रूपमें व्यवस्था करनेके बजाय सबसे अच्छी मदद यही हो सकती है कि माता-पिताको समझा-बुझाकर अिस बातके लिअे प्रेरित किया जाय कि वे अपनी लड़कीके लिअे वरका सौदा न करके अुसके लिअे अैसे किसी लड़केका चुनाव करें, या खुद लड़कीको अैसा वर चुन लेनेका मौका दें, जो प्रेमके लिअे ही अुससे ब्याह करे न कि रुपयेके लिअे। अिसका अर्थ यह हुआ कि स्वेच्छापूर्वक पति चुननेकी प्रवृत्ति बढ़ाअी जाय। जाति और प्रान्तकी यह दुहेरी दीवार टूटनी ही चाहिये। क्योंकि अगर भारत अेक और अखंड है, तो निश्चय ही अुसमें अैसे कृत्रिम भेदभाव नहीं रहने चाहियें, जिनसे परस्पर खानपान और ब्याह-शादीका व्यवहार न रखनेवाले अनगिनत छोटे-छोटे दल बन जायें। अिस निर्दय प्रथाका धर्मसे कोअी सम्बन्ध नहीं। अैसी दलील करनेसे काम नहीं चलेगा कि अिसकी शुरुआत व्यक्तियोंसे नहीं हो सकती, अिसलिअे जब तक सारा समाज परिवर्तन करनेके योग्य न हो जाय, तब तक अुन्हें प्रतीक्षा ही करते रहना चाहिये। क्योंकि कभी कोअी अैसा सुधार नहीं हुआ जिसके लिअे पहले कुछ साहसी व्यक्तियोंने खुद ही समाजमें प्रचलित निर्दय रस्म-रिवाजोंके खिलाफ बगावत न की हो। और स्कूल-मास्टरकी लड़की अगर विवाहको अेक पवित्र सम्बन्धके बदले, जैसा कि वह निश्चित रूपसे है, बाजारू सौदा माननेसे अिनकार कर दे तो भला अुससे अिन मास्टर साहब पर क्या मुसीबत आ जायगी? अिसलिअे मैं अुन्हें यही सलाह दूंगा कि वे साहसपूर्वक ब्याहके लिअे कर्ज या भीख मांगनेका विचार छोड़कर अपनी लड़कीकी सलाहसे अुसके लिअे किसी अुपयुक्त पतिका चुनाव करें, फिर वह चाहे किसी भी जाति या प्रान्तका हो, और अिस प्रकार अुन चार सौ रुपयोंको भी बचा लें, जो अपने आजीवन-बीमेसे वे पा सकते हैं।

('हरिजनसेवक', २५–७–'३६)

जात-पांतकी अिन महान हानिकर बाड़ोंको तोड़नेकी मैं जोरोंसे सलाह दूंगा। ये बाड़ें तोड़ने पर वरके चुनावके लिअे अेक विशाल क्षेत्र खुल जायगा और यह पैसे ठहरानेकी बुराअी बहुत हद तक अपने-आप कम हो जायगी।

('हरिजनसेवक', ५–९–'३६) मो० क० गांधी

सर्वोदय और राजनीति

[चांडिल सर्वोदय-सम्मेलनमें ता० ९–३–'५३ को विनोबाजी द्वारा दिये गये सुबहके भाषणकी पहली किस्त।]

१

आज तीन विषयों पर मैंने अपने विचार आप लोगोंके सामने रखनेका सोचा है। अेक यह कि हम जो सर्वोदय-समाजके सेवक हैं, अुनका रुख सरकारी योजनाके बारेमें या भिन्न-भिन्न राजकीय पक्षोंके विषयमें किस तरहका होना चाहिये। दूसरे, भूदान-यज्ञके कार्यको आगे बढ़ानेके लिअे क्या व्यूहरचना करनी चाहिये। और तीसरे, कुछ अंतःपरीक्षण करके जो कमियां और दोष हम लोगोंमें दीख पड़ते हैं, अुनकी कुछ चर्चा करना, ताकि दोषोंका शोधन हो। यह जो तीसरा विषय है, वह कुछ गहरा है। अिसलिअे अुसकी चर्चा अभीके व्याख्यानमें मैं नहीं करूंगा, बल्कि शामका जो आखिरी व्याख्यान होगा, अुसके लिअे यह विषय मैंने रख छोड़ा है। अभीके व्याख्यानमें दो विषयोंकी चर्चा हम करेंगे।

मुक्त ज्ञान-प्रचारकी वृत्ति

भूदान-यज्ञके विषयमें मैं बोलता हूं, तो मेरा यह रिवाज रहता है कि सिर्फ अुस कामको प्रेरणा देनेके लिअे जो कहना पड़ता है, अुतना ही कहकर मैं संतोष नहीं मानता, बल्कि जिसे हम सर्वोदय-विचार कहते हैं और जो जीवनकी अेक स्वयंपूर्ण और विधायक दृष्टि है, वह भी सामने रखता हूं। फिर अुसके अन्दर जो बहुतसे विषय आते हैं, अुनकी भी चर्चा कर लेता हूं। कभी-कभी यहां तक होता है कि सारे व्याख्यानमें भूदानका बहुत ही थोड़ा जिक्र आता है और अुसके अिर्दगिर्दकी भूमिकायें लोगोंके सामने रखनेकी अधिक जरूरत होती है। और वैसा ही करता हूं। कभी-कभी लोग कअी मुख्तलिफ सवाल पूछते हैं, अुनका जवाब भी देता हूं। अिस तरह अेक मुक्त ज्ञान-प्रचार जिसको कहते हैं, वही मैं करता रहता हूं। मेरी दृष्टि भी दरअसल अैसी ही है कि किसी अेक विशेष कार्य पर नजर रखकर सोचनेके बजाय मुक्त-चिंतन मुझे अधिक सधता है। पर अेक काम अुठाकर मैं घूम रहा हूं, यह बात नहीं भूल सकता। अिस वास्ते कुछ विषय-मर्यादा या चिंतन-मर्यादा होती है। लेकिन मेरा स्वभाव मर्यादामें चिंतन करनेका नहीं है।

www.vinoba.in

अेक प्रश्न

लोग तरह-तरहके सवाल पूछते हैं और खास करके कम्युनिटी प्रोजेक्ट या नेशनल प्लानिंगकी योजना या दूसरे अुन-अुन पक्षोंके खास अुसूल, जिसको हम आअिडियालॉजी कहते हैं, अुन सबके विषयमें सवाल पूछे जाते हैं और मैं अुत्तर देता हूं। अेक भाअीने मेरा अुत्तर देनेका जो तरीका है, अुस विषयमें सवाल पूछा कि "जहां तक हो सकता है, आप कोशिश करते हैं कि भिन्न-भिन्न पक्षोंकी और सरकारकी जो योजना है, अुनके साथ अधिक-से-अधिक सहयोग कैसे हो। यह बात जंचती नहीं है। जरूरत अिस बातकी है कि हमारे विचार दूसरे पक्षोंके या सरकारके विचारोंसे कैसे भिन्न हैं और कुछ अंशोंमें तो विरोधी हैं, यही बात लोगोंके सामने अधिक स्पष्ट होनी चाहिये; बजाय अिसके कि अुनके विचारोंके साथ हम अधिकसे अधिक अपना सहयोग देनेकी कोशिश करें।" अिस तरहका आक्षेप या प्रश्न कहिये, अेक सर्वोदयप्रेमीने पूछा है। मैंने सोचा कि मेरे सारे चिंतनके पीछे जो दृष्टि है, वह मैं सर्वोदय-सम्मेलनमें ही रखूं।

सरकारी योजनाके अच्छे अंशोंकी पुष्टि

पहले तो मैं सरकारी योजना हाथमें लेता हूं। अुस योजनाके बारेमें हमारा जो मुख्य आक्षेप है, वह यह है कि अुसकी दृष्टिमें फरक है। अिस अेक आक्षेपके पेटमें बाकीके सारे आक्षेप आ जाते हैं। अिस मुख्य वस्तुका विश्लेषण प्लानिंग कमीशनके सामने जितनी स्पष्टतासे मैं रख सकता था, मैंने रख दिया था। अुन लोगोंने मेरे विचार समझनेकी कोशिश की। और कहना चाहिये कि प्लानिंग कमीशनकी जो नअी रिपोर्ट है — जिसे वे आखिरी नहीं समझते और संशोधनकी पात्र है, अैसा मानते हैं — अुसमें पहली रिपोर्टकी तुलनामें काफी संशोधन और सुधार हैं; तिस पर भी जहां दृष्टि-भेद ही है, वहां हमारी और अुनकी योजनामें बहुत फरक पड़ जाता है। अुसको मैं दोहराता नहीं हूं। कोअी सवाल पूछता है, तो अुतनी सफाअी कर देता हूं। कुल मिलाकर सरकारी योजनाके प्रति मेरी सहानुभूति प्रगट होती है, अिस तरहका आभास लोगोंको होता है और वह सही है। क्योंकि मैं नहीं चाहता कि अेक बातको हम बुद्धिभेद पैदा करके बिगाड़ें। यह शक्ति आज हममें है कि सरकारी योजनाको हम नाकामयाब बनाना चाहें, तो बना सकते हैं। लेकिन यह कोअी बड़ी शक्ति नहीं है। आज हम अपनी योजना लोगोंके सामने रखकर लोगोंको अुस पर अमल करनेके लिअे राजी करनेकी या अुस प्रोग्रामको लोगोंके सामने रखकर हम चुन आयें और हमारी अुस तरहकी सरकार बनायें, अैसी शक्ति नहीं रखते। तो किसी बातको बिगाड़नेकी जो शक्ति हम रखते हैं, अुसका अुपयोग करके लोगोंमें अश्रद्धा और बुद्धिभेद पैदा हो और जो कुछ अुस योजनामें अच्छाअी है, अुस पर भी अमल न हो, यह मैं अहिंसाकी दृष्टिसे अुचित नहीं मानता। हमेशा यह होने ही वाला है कि दंडशक्ति पर आधारित और प्रचलित परिस्थितिके बहुत आगे न जा सकनेवाली सरकार जो योजना करेगी, वह हमारी योजनाके अत्यन्त अनुकूल नहीं होगी। अुस हालतमें अुसमें जो अच्छाअी रहेगी, अुसके साथ अनुमति प्रगट करना और अुसके लिअे जनतामें श्रद्धा बनी रहे अैसी कोशिश करना मैं अपना कर्तव्य मानता हूं, अेक अहिंसक विचारकी दृष्टिसे। नहीं तो केवल हम खंडन करते चले जायं, तो आज लोगोंमें अुत्साहकी बहुत कमी है, आलस्य है, अविश्वास है; तो अितना हो सकता है कि जो योजना अुन्होंने पेश की है, अुस पर लोग अमल करें। लेकिन अुसमें से हम कुछ पायेंगे नहीं। हम पायेंगे तो तब, जब हमारी योजना चले। अिसलिअे मैं यह अुचित मानता हूं कि अपनी योजना हम जनताके सामने रखते जायं और साथ-साथ सरकारी योजनामें जो अच्छे अंश हैं, अुनके लिअे हमारी अनुमति प्रगट करते जायं।

दूसरेकी नीयत पर भरोसा रखें

दूसरी बात यह है कि जब हम किसी बातका खंडन करते हैं, तो सामनेवालेकी नीयत पर भी आक्षेप करते हैं। अिसे मैं अन्याय मानता हूं। जब मैं अुसकी नीयत पर आक्षेप करता हूं, तो मेरी नीयत पर संशय रखनेका अधिकार मैं अुसको देता हूं। अिस तरह अुसके हाथमें अेक अधिकार देना मैं अपने हितमें अच्छा नहीं मानता और चाहता हूं कि मेरी नीयत पर अुसका विश्वास होना चाहिये और मेरा भी अुसकी नीयत पर विश्वास होना चाहिये।

पूंजीवाद और सर्वोदय-विचार

मैं जानता हूं, मानता हूं और कभी-कभी कहता भी हूं कि सरकार पर पूंजीवादी असर बहुत है। लेकिन वह अिस वास्ते नहीं है कि वे पूंजीवादको चाहते हैं, बल्कि अिस वास्ते है कि कुछ तो वे अपनेको लाचार समझते हैं और प्रचलित परिस्थितिमें पूंजीवादियोंकी अक्ल और शक्तिका अुपयोग करना चाहते हैं। और कुछ अुनके विचार भी अुस वादके लिअे अनुकूल हैं। और यह जो मैं कह रहा हूं, वह न सिर्फ अभीकी सरकारके चलानेवालोंके लिअे कहता हूं, बल्कि कम्युनिस्टोंके लिअे भी यही कहता हूं। हमारी योजनामें विकेन्द्रीकरण यानी विभाजन है — अुत्पत्तिका और बंटवारेका भी। लेकिन कम्युनिस्टोंके अुत्पादनमें विकेन्द्रीकरणका विचार नहीं है। और जो अपनेको लेफ्टिस्ट यानी प्रगतिवादी मानते हैं, अुनमें और पूंजीवादियोंमें अिस विषयमें बहुत फरक नहीं है कि अुत्पत्ति केन्द्रित की जाय, बड़े-बड़े यंत्रोंके जरिये की जाय। फरक विभाजनमें है। लेकिन हमारा फरक सम्पत्तिके विभाजन और अुत्पादनके तरीकेमें भी है। तो अेक अंशमें वे अिच्छासे पूंजीवादी हैं, अैसा भी कह सकते हैं। और अुस अंशमें कम्युनिस्ट भी पूंजीवादी हैं। हम ही अैसे हैं, जो पूंजीवादको किसी तरहसे मान्यता नहीं देते हैं। तो यह है हममें और आजकी सरकार तथा कम्युनिस्टोंमें भेद। अतः अिस दृष्टिसे जब हम सोचते हैं, तो अुनकी नीयतके बारेमें शंका नहीं रख सकते, बल्कि विचारकी सफाअी हो जाती है। जिस विचार-श्रेणीमें और जिस हालतमें वे पड़े हैं, अुस विचार-श्रेणीमें और अुस हालतमें अगर हम होते तो किस तरह करते, यह जब हम सोचने लगते हैं तो अैसा दीख पड़ता है कि हम करीब-करीब वैसा ही करते, जैसा कि वे आज करते हैं। तो यह मेरा अेक आजकी सरकारके बारेमें सर्वसामान्य रुख है।

कम्युनिटी प्रोजेक्टके प्रति सर्वोदयवालोंका रुख कैसा हो?

लेकिन अिसके साथ-साथ मैंने परसोंके व्याख्यानमें यह भी स्पष्ट किया है कि हमारी आंखोंके सामने अेक निश्चित मार्ग है और हमारे पांव तो अुसी मार्ग पर चलने चाहियें। लोग मुझे पूछते हैं कि सरकारकी योजनामें हम कहां तक सहयोग दें और सहयोगिताकी वृत्ति रखें? तो मैं कहता हूं कि अुनकी जो योजना हमको मान्य होगी और सर्वमान्य भी, अुसमें हम सहयोग जरूर दे सकते हैं, लेकिन हर हालतमें हमें अपनेको मुक्त रखना चाहिये। यह हालत नहीं निर्माण होनी चाहिये कि हमारी कोअी अेक कम्युनिटी प्रोजेक्ट है और अुसमें हमारे हाथ फंसे हैं। वे हमसे जो सलाह-मशविरा करना चाहेंगे, कर सकते हैं। जो कुछ नैमित्तिक मदद पहुंचानी है, वह भी पहुंचा सकते हैं। लेकिन अुस तरहकी योजनाकी जिम्मेवारी अगर हम अुठाते हैं, तो मैं मानता हूं कि हम गलती करते हैं। लेकिन हमारे सर्वोदय-समाजके लोगोंमें अिस तरह चलता है — और वह ठीक भी है, क्योंकि सर्वोदय-समाज अेक मुक्त समाज है, जिसमें हरअेक मनुष्य खुद सोचकर कोअी काम करता है — कि हमारे सेवकोंमें से कम्युनिटी प्रोजेक्टको कुल

www.vinoba.in

मिलाकर अच्छा समझकर कुछ लोग हाथमें लेते हैं। दूसरे कुछ अैसे हैं, जो अुससे बहुत नफरत करते हैं और कहते हैं कि यह देशको बिलकुल ही बरबाद करनेवाली है। और तीसरे कुछ अैसे हैं, जो कहते हैं कि अिसमें कुछ अच्छाअी है, कुछ नहीं भी है। लेकिन हमें अुस तरहकी योजना करनेके लिअे अगर सरकार कहती है, तो कुछ शर्तें हम सरकारके सामने रखें और अुनको वह मंजूर करे तो हम भी अपने ढंगसे काम कर सकते हैं। अिस तरह तीन प्रकारकी दृष्टियां हैं। मेरी वृत्ति है — "हाथी चलत है अपनी गतिमां"। आगे जो कविने लिखा है, वह कहनेका अधिकार कविका है, मेरा नहीं। जितना अुच्चारण मैंने किया, अुतना अधिकार मेरा है। तो हाथी अपनी गतिमें चलेगा और अपना ही काम करता रहेगा, अपने चौबीस घंटे और अपने सारे चिंतनका अुपयोग अपने विचारोंको बढ़ावा देनेमें करेगा। दूसरोंके खंडनमें जब हम पड़ते हैं, तब अपनी रचना करनेके काममें शक्ति कम लगती है। अिसको मैं शक्तिक्षय मानता हूं। अिस वास्ते भी मैं खंडनमें नहीं पड़ता और मेरा विचार है कि हमें खंडनमें नहीं पड़ना चाहिये। अिधर तो हम अुनका खंडन भी करते हैं और अुधर अुनकी योजनामें फंस भी जाते हैं। ये दोनों रास्ते हमारे लिअे गलत हैं। और दोनोंसे हमारा नुकसान होगा, अैसा मैं मानता हूं।

पक्ष सिर्फ दो : सज्जन और दुर्जन

दूसरी बात है कि ये जो भिन्न-भिन्न राजकीय पक्ष हैं, अुनके विषयमें हमारी नीति क्या होनी चाहिये? मेरा प्रयत्न तो यह है कि ये सारे राजकीय पक्ष मिट जायं। मेरे प्रयत्नके बावजूद वे रहें तो रहें, लेकिन मेरी कोशिश यह है कि अेक सर्वमान्य कार्यक्रम हम लोगोंके सामने रखें, जिसे पूर्ण करनेमें सारे लोग पक्षभेदोंको भूलकर अपना सहयोग दें। तो आज जो पक्ष-भेद बने हैं, वे कम हो जायंगे और मतकी अेकता बहुत होगी; और जब प्रत्यक्ष कार्य भी अैसा मिला है, जिससे देश आगे बढ़ता है, जनशक्ति बढ़ती है और अुस काममें सब लोग मिल जाते हैं, तो आगे जाकर १९५७ में जो चुनाव होगा, वह सज्जन-सज्जनोंके बीच नहीं होना चाहिये। आज तो कौरव-पांडव चलता है। कौरवोंके पक्षमें कुछ अच्छे लोग हैं, तो पांडवोंके पक्षमें कुछ बुरे लोग हैं। तो दोनों पक्षोंमें अच्छे-बुरे लोग होते हैं और अेक सज्जनके सामने दूसरा सज्जन खड़ा होता है। यह हालत ही पैदा नहीं होनी चाहिये। होना यह चाहिये कि सारे सज्जन अेक बाजू रहें और दुर्जन दूसरी बाजू। सज्जनता विरुद्ध दुर्जनता, अैसा ही होना चाहिये।

भारतीय लोकसत्ताका नमूना — "पांच बोले परमेश्वर"

लेकिन पाश्चिमसे अेक लोकसत्ता आअी है, जो मानता है कि दो पक्ष होने चाहियें, और अुनके सहयोगी संघर्षसे राष्ट्र ठीक रास्ते पर रहता है, दोषोंका संशोधन होता है, अित्यादि कल्पनायें अुस डेमाक्रेसीमें पड़ी हैं। मेरा यह मानना है कि अुस विचारमें कुछ अच्छाअी है, लेकिन अुसमें से जो दोष पैदा होते हैं, अुनका निराकरण हमको करना चाहिये। और अिसलिअे मैंने कहा था कि हमारा यानी हिन्दुस्तानका सियासी अनुभव हमारी ग्राम-पंचायतमें रहा है, जहां यह अुसूल था कि 'पांच बोले परमेश्वर।' पांच बोले परमेश्वरका अर्थ यह होता है कि अेक बोले, दो बोले परमेश्वर तो होता ही नहीं, लेकिन तीन या चार बोले परमेश्वर भी गलत है। यानी आज यह सियासी मान्य कानून है कि जो मेजॉरिटी कहेगी वैसा होगा। लेकिन हमने तो यह माना कि सारे पंचोंकी अेकराय होनी चाहिये। पांचों पंच अेक राय बनायेंगे, तब कोअी प्रस्ताव पास होगा। अिसको मैं पांच बोले परमेश्वर कहता हूं।

अिस विचारसे अगर हम काम न करें, तो आज जो सारी दुनियामें मेजॉरिटी, माअिनॉरिटीके सवाल पैदा हुअे हैं, वे मिटेंगे नहीं।

सर्व-सम्मत विषयों पर ही अमल हो

कोशिश यह होनी चाहिये कि कुल मिलाकर देशका विचार शुद्ध कैसे हो? आज भिन्न-भिन्न विचारोंके होते हुअे भी अुनमें अगर कोअी समान अंश है और बहुत अंश समान होता है — सज्जनोंके विचारोंमें जो मतभेद होते हैं, वे बहुत गौण होते हैं और अुनके अंदर काफी अेकता होती है, अिसलिअे जो समान अंश है — अुस समान अंशका ही कार्यक्रम बनना चाहिये। और जो भिन्न अंश है, वह चर्चाका विषय होना चाहिये; क्रियाका विषय नहीं होना चाहिये। मतलब यह कि जब तक सज्जनोंमें किसी अेक विषय पर मतभेद है, तब तक चार विरुद्ध पांच सज्जन, अैसा निर्णय करके अुस पर अमल करना मैं गलत मानता हूं। मेरा मानना है कि सज्जनोंमें जिस विषय पर मतभेद है, वह आचरणके लायक नहीं रहा। अुस पर चिंतन होना, चर्चा होना जरूरी है। और जिस विषय पर मतभेद नहीं रहा, अुस पर अमल होनेकी जरूरत है। लोगोंके सामने प्रत्यक्ष अमलके लिअे वही विषय आना चाहिये, जिसके बारेमें मुख्तलिफ सज्जनोंमें मतभेद नहीं है। सज्जन किसे कहें, किसे न कहें अित्यादि चर्चा अुठ सकती है। अुसमें पड़नेका मेरा विचार नहीं है। वह अभीका विषय नहीं है। लेकिन मैंने अपना विचार कह दिया कि ये जो भिन्न-भिन्न पक्ष हैं, अुनकी भिन्नता मिटानेमें हमें पुरुषार्थ बताना चाहिये। और गीताने यही कहा कि ये नाहक भेद अूपरके दीखते हैं। लेकिन अुनमें कोअी अेक विशेष वस्तु होती है, अुसको हमें पहचानना चाहिये। तब अेकताकी भूमिका पैदा होती है, नहीं तो दुनियामें भिन्न-भिन्न विचार तो रहने ही वाले हैं। परन्तु भिन्न विचार, विचारमें रहें तो अच्छा है। यह अेक तत्त्वज्ञानका अुसूल हमारे शास्त्रकारोंने माना है।

हिंदू धर्ममें आचरण-शास्त्र पर मतभेद नहीं है

आपने देखा होगा कि हिन्दू धर्ममें अितने दर्शन हैं — आस्तिक दर्शन भी हैं और नास्तिक दर्शन भी हैं और कुल मिलाकर कोअी भी दर्शन हिन्दू धर्ममें पच जाता है। और वे अेक-दूसरेके खिलाफ काफी तीव्रतासे भी बोलते हैं। और विचारकी स्वतंत्रता जितनी मैंने संस्कृतमें पायी, अुतनी और किसी साहित्यमें नहीं पायी। साक्षात् प्रहार अेक-दूसरोंके विचारों पर होता है, वह अेक देखनेकी चीज है। लेकिन रामानुज और शंकरके विचारोंमें जो भेद है, वे दोनों अेक-दूसरोंके विरुद्ध प्रगट भी कर लेंगे और अुसकी चर्चा-चिंतन भी करेंगे। लेकिन जिसको आचरण-शास्त्र कहते हैं, अुसमें अुनका मतभेद नहीं है। सत्यको दोनों मानेंगे, अहिंसाको दोनों मानेंगे, सदाचारको दोनों मानेंगे, कुछ विधियोंको दोनों मानेंगे, कुछ निषेधोंको दोनों निषिद्ध मानेंगे और अुसको धर्म कहेंगे। यह बात नहीं है कि रामानुजके राजमें सुबह अुठना चाहिये और शंकरके राजमें सुबह नहीं अुठना चाहिये।

सर्वमान्य विषयोंका ही प्रोग्राम बनायें

तो अिस तरह जहां क्रियाका क्षेत्र है, वहां अगर हम अेकताके आधार पर आगे बढ़ते हैं, तो देश आगे बढ़ता है और समाजमें स्थिरता आती है। और जो विचारभेदका विषय है, अुसकी हम चर्चा करें, अुसके बारेमें जितनी बारीक छानबीन हो सकती है, करें। जब तक मेरा विचार आपको जंचता नहीं, तब तक मैं आपको समझाता रहूंगा। और जब तक आप अुसको समझते नहीं, तब तक आप अुसको कबूल न करें। यह सब होना चाहिये और पूरी स्वतंत्रतासे और मुक्ततासे होना चाहिये। परन्तु जहां आप अेक प्रोग्राम तय करेंगे, वहां वह प्रोग्राम तय होना चाहिये, जिसके बारेमें सब सज्जनोंकी मान्यता है। भाअियो, यह मैंने अेक विषय पूरा कर दिया कि सरकारी योजनाके विषयमें और भिन्न-भिन्न पक्षोंके विषयमें हमारा रुख क्या होना चाहिये।

(चालू)

www.vinoba.in

हमारी महान विरासत

[डॉ० सुशीला नय्यरने २–१२–'५२ को आगरा विश्वविद्यालयके विद्यार्थियोंके सामने जो गांधी-स्मारक भाषण दिया था, अुसकी यह चौथी किस्त है।]

४

गांधीजी जीवनके सच्चे कलाकार थे। अुनके हर शब्द और कार्यका अुस जीवन-पद्धतिके साथ पूरा मेल बैठता था, जिसका केन्द्रबिन्दु सत्य था। वे अैसे समाजके हिमायती थे, जिसमें न तो कोअी शोषक हो और न शोषित। वे विविधतामें अेकताके प्रतीक थे। अपने जीवनकी हर सांसके साथ अुन्होंने शांतिके लिअे काम किया, लेकिन अुसका जरिया था क्रांति। अुनका आदर्शवाद आकाशको छूता था, फिर भी अुनके पांव जमीन पर मजबूतीसे जमे हुअे थे। वे अपने आसपासके छोटेसे छोटे व्यक्तिकी जरूरतोंका भी ध्यान रखते थे। स्त्रीत्वके प्राचीन आदर्शके कट्टर समर्थक होकर भी अुन्होंने भारतकी स्त्रियोंको पुरुषोंके अभिमानपूर्ण स्वामित्वके खिलाफ विद्रोह करना सिखाया, जिसका दावा और अमल अुनके पति अुन पर किया करते थे। अिसके फलस्वरूप पुरुषोंके लिअे चूल्हा-चक्की और घर-गृहस्थीका भार ढोनेकी स्थितिसे अुठकर वे आजादी और सामाजिक सुधारकी लड़ाअीमें पुरुषोंकी समान भागीदार बन गअीं। गांधीजीका आश्रम अुनकी प्रयोगशाला थी, जहां वे अुन पद्धतियोंका अमल करते और अुन्हें पूर्ण बनाते थे, जिनका वे व्यापक क्षेत्रमें प्रयोग करते थे। पारिवारिक मतभेदोंको दूर करने और प्रतिदिनकी समस्यायें हल करनेमें वे अुतना ही ध्यान देते थे, जितना कि राज्यकी अूंची नीतियों और राष्ट्रीय तथा आन्तरराष्ट्रीय महत्त्वके सवालों पर देते थे। देशके कोने-कोनेसे और दुनियाके अनेक हिस्सोंसे आनेवाले स्त्री-पुरुषोंको वे आश्रममें रोजके नीरस घरेलू कामकाजमें लगाकर जीवनकी तालीम देते थे। सच्चे शिक्षाशास्त्री होनेके कारण वे हरअेकको अुसके अपने ढंगसे विकास करनेमें मदद करते थे और अिस तरह हर व्यक्तिके भीतरके सर्वोच्च गुणोंको बाहर ला सकते थे। दुनियाके अितिहासमें किसी अेक व्यक्तिने अितने कार्यकर्ता तैयार नहीं किये, जितने गांधीजीने किये। दुनियामें और किसी व्यक्तिने अितनी और अैसी व्यक्तिगत वफादारी नहीं पाअी, जितनी और जैसी कि गांधीजीने पाअी थी। अुन्हें जाननेवाला हर कोअी अुन्हें प्यार करने लगता था और जो कोअी अुनके भीतरी क्षेत्रमें पहुंच जाता था, अुसे लगता था कि "बापू सबसे ज्यादा प्यार मुझे ही करते हैं।"

व्यक्तिगत वफादारी और अिस तरह निर्माण हुअे प्रबल मानव-प्रेमके बंधन सम्बन्धित व्यक्तिकी तालीम और विकासमें अेक सीढ़ी जैसे ही थे। गांधीजी अुन्हें अपने प्रेम और वफादारीके क्षेत्रको धीरे-धीरे व्यापक बनाना सिखाते थे। मुझे याद है कि अेक बार जब मेरे भाअी सेवाग्राममें गंभीर रोगसे पीड़ित थे, तब बापूने कैसे मुझे आश्चर्यमें डालते हुअे भाअीसे कहा था कि वे मुझे अपनी व्यक्तिगत सेवाके लिअे न बुलावें। मेरे अपने भाअीको छोड़कर आश्रम और सेवाग्रामके हर आदमीकी सेवा मुझे करनी थी। अिस तरह वे हमें अपने पारिवारिक घेरेको यहां तक व्यापक बनाना सिखाते थे कि अन्तमें सारी मानव-जाति अुसमें समा जाय। नोआखलीमें अुन्होंने यही किया। मुझे अपनी पार्टीके सदस्योंकी सेवा-शुश्रूषा नहीं करनी थी। अपना सारा समय मुझे गांववालोंकी सेवामें लगाना होता था। हमारे दलमें से जो कोअी बीमार पड़ता, अुसे कुदरतके पंच महाभूतोंकी मददसे या गांवमें जो भी दवा-दारूकी मदद मिल जाय — और यह मदद नहींके बराबर ही होती थी — अुससे अपना अिलाज करना होता था। केवल ठक्करबापा ही अिस नियमके अपवाद थे। गांधीजीकी तरह ही ७० से अूपरकी अुम्रवाले होनेके कारण वे खुद अपना नियम बना सकते थे। जब वे बीमार पड़े तो अुन्होंने बापूको लिख दिया: "मैं आपके गांवमें आ रहा हूं। मेहरबानीसे आपके साथ रहनेका और सुशीला द्वारा मेरे अिलाजका प्रबन्ध करें।" बापूसे हारनेमें बापूको पूरा सन्तोष था। लेकिन अुन्होंने दूसरे किसीको अपने नियमका अपवाद नहीं होने दिया। अिस तरह बापूने हमें अपने प्रेम और वफादारीके घेरेको परिवारसे बढ़ाकर आश्रम तक और आश्रमसे बढ़ाकर नोआखलीके गांवोंमें रहनेवाले बिलकुल अजनबी लोगों तक, जिनमें से कअी लोगोंने भयंकर कृत्य किये थे, बढ़ानेकी शिक्षा दी। अिस दृष्टिमें कुछ दिव्य या अव्यावहारिक जैसा नहीं था। सच पूछा जाय तो गांधीजीका हर कदम अधिकसे अधिक व्यावहारिक होता था। अुनकी पद्धतिसे नोआखलीके लोगोंका जैसा हृदय-परिवर्तन हुआ था, वह कुछ अनोखी चीज थी। लेकिन आज मैं अुस रोमांचक कहानीमें आपको नहीं ले जाअूंगी।

आज मेरा अुद्देश्य आपको अुस पुरुषके जीवन और सन्देशकी झलक दिखानेका है, जो अलौकिक महात्मा बनकर भी बड़े-से-बड़ा मानव बना रहा। हमारे नीजवान अकसर अपने रुख और दृष्टिकोणमें छिछले और शाब्दिक चर्चावाले हो जाते हैं। गांधीजीके विचारोंका सादापन अुन्हें ज्यादा पेचीदा सिद्धान्तोंकी खोजकी तरफ मोड़ता है। वे यह भूल जाते हैं कि अुनके अुपदेशोंके सादेपनने ही अुन्हें यह बुनियादी शक्ति प्रदान की थी। जो कोअी आम लोगोंको अपने साथ ले जाना चाहता है, अुसे अुनके सामने अैसा कार्यक्रम रखना चाहिये, जिस पर अमल करना अुनकी पहुंच और योग्यताके भीतर हो। अुसे अपने सन्देशको सादा और सरल बनाना चाहिये, ताकि आम लोग अुसे समझकर अुसका अनुसरण कर सकें। गांधीजीकी शक्तिका रहस्य अुनकी आम जनताके मानसको समझ लेनेकी योग्यतामें था। वे अुसकी नब्जको पहचानते थे। अुनके जादूभरे स्पर्शसे आलसी और निष्क्रिय स्त्री और पुरुष क्रियाशील और मेहनती बन जाते थे; स्वार्थी और लालची अपने स्वार्थ और लालचको भूलकर त्याग और निस्स्वार्थ सेवाके आदर्शको खुशी-खुशी अपनाते थे। दिव्य ज्योति हरअेकके हृदयमें फिरसे कम-ज्यादा मात्रामें चमकने लगी। आम लोगोंके अैसे आध्यात्मिक पुनर्जागरणका कुल मिलाकर बहुत भारी असर हुआ।

(अंग्रेजीसे) (अपूर्ण)

गांधी और साम्यवाद

[श्री विनोबाकी भूमिकाके साथ]

लेखक: **किशोरलाल मशरूवाला**

कीमत १–४–० डाकखर्च ०–५–०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद–९

विषय-सूची

		पृष्ठ
भूदान-आन्दोलनकी क्रांतिकारी शक्ति	मगनभाअी देसाअी	८९
गयामें विनोबाजी	नि० दे०	९०
अ० भा० खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड	प्राणलाल अेस० कापड़िया	९१
योजना और बेकारी	मगनभाअी देसाअी	९२
अैसी मुसीबत जिससे बच सकते हैं	गांधीजी	९३
सर्वोदय और राजनीति	विनोबा	९३
हमारी महान विरासत — ४	सुशीला नय्यर	९६
टिप्पणी:		
गांधी-चित्रावली		९१

www.vinoba.in